B.A Sem 4 Important questions By Pramod Sir.

Q. 1. 'मधुआ' कहानी की कथावस्तु प्रस्तुत कीजिए।

Ans. 'मधुआ' शीर्षक कहानी में एक शराबी का चित्रण है। बालक मधुआ के कारण शराबी के जीवन में परिवर्तन आता है और उसमें वात्सल्पजन्य दायित्वबोध जग जाता है। इस कहानी में बालक मधुआ का संक्षिप्त किन्तु आकर्षक चित्रण हुआ है। इस कहानी की कथावस्तु इस प्रकार है-

आज सात दिन हो गये, पौने को कौन कहे-हुआ तक नहीं। आज सातवाँ दिन है, सरकार।

तुम झूठे हो। अभी तो तुम्हारे कपड़े से महक आ रही है

वह.... वह.... तो क दिन हुए। सात दिन के ऊर कई दिन हुए अंधेरे में बोतल उद्देलने लगा था। कपड़े पर गिर जाने से नशा भी न आया और आपको कहने का...

क्या कहूँ सच मानिए सात दिन ठीक सात दिन से एक बूँद भी नहीं।

ठाकुर सरदार सिंह हंसने लगे। लखनऊ में लड़का पढ़ता था। ठाकुर साहब भी कमी-कमी वहीं आ जाते। उनको कहानी सुनने का चसका था खोजने पर यही शराबी मिला। वह रात को, दोपहर में, कभी-कभी सबेरे भी आता। अपनी लच्छेदार कहानी सुनाकर ठाकुर का मनोविनोद करता।

ठाकुर हँसते हुए कहा तो आज पियोगे न।

कैसे कहूँ। आज तो जितना मिलेगा, सब पिऊँगा। सात दिन चने चबेने पर बिताये हैं, किसलिए।

अद्भुत सात दिन पेट काकर अच्छा भोजन न करके तुम्हें पीने की सूझी है। यह भी....

सरकार। मौज-बहार की एक घड़ी, एक लम्बे दु:खपूर्ण जीवन से अच्छी है। उसकी खुमारी में रूखे दिन काट लिये जा सकते हैं।

अच्छा, आज दिन भर तुमने क्या क्या किया है? मैंने? अच्छा सुनिये-सबेरे कुहरा पड़ता था, मेरे धुँआ से कम्बल-सा वह भी सूर्य के चारों ओर लिपटा था। हम दोनों मुँह छिपाये पड़े थे।

ठाकुर साहब हँसकर कहा-अच्छा, तो इस मुँह को छिपाने का कोई कारण?

सात दिन से एक बूँद भी गले न उतरी थी। भला में कैसे मुँह दिखा सकता था और जब बारह बजे धूप निकली, तो फिर लाचारी थी। उठा, हाथ-मुँह धोने में जो दु:ख हुआ सरकार वह क्या कहने

की बात है। पास में पैसे बचे थे। चना चबाने से दाँत भाग रहे थे। कट-कटी लग रही थी। पराठेवाले के यहाँ पहुँचा, धीरे-धीरे खाता रहा और अपने को रोकता भी रहा। फिर गोमती किनारे चला गया। घूमते-घूमते अँधेरा हो गया बूँदे पड़ने लगी, तब कहीं भाग कर आपके पास आ गया।
अच्छा, जो उस दिन तुमने गड़रिये वाली कहानी सुनाई थी जिसमें आसफुदीला ने उसकी लड़की का आँचल भुने हुए भुट्टे के दाने के बदले मोतियों से भर दिया था; वह क्या सच है?
सच! अरे, गरीब लड़की भूख से उसे चबा कर धू-धू करने लगी।.... रोने लगी। ऐसी निर्दशी दिल्लगी बड़े लोग कर ही बैठते हैं। सुना है श्री रामचन्द्र ने भी हनुमान जी से ऐसा ही...
ठाकुर साहब ठठाकर हँसने लगे। पेट पकड़ कर हँसते-हँसते लोट गये। साँस बटोरते हुए सम्हल कर बोले-और बड़प्पन किसे कहते हैं? कंगाल तो कंगला गधी लड़की। भला उसने कमी मौसी देखे थे, चबाने लगी होगी। मैं सच कहता हूँ, आज तक तुमने जितनी कहानियाँ सुनाई, सबमें बड़ी टीस थी। शाहजादों के दुखड़े, रंग-महल की अभागिनी बेगमों के निष्फल प्रेम, करूण कथा और पीड़ा से भरी हुई कहानियाँ ही तुम्हें आती हैं, पर ऐसी हँसाने वाली कहानी और सुनाओ, तो मैं अपने सामने ही बढ़िया शराब पिया सकता हूँ।
सरकार! बूढ़ों से सुने हुए वे नवाबी के सोने-से दिन, अमीरों की रंग-रेलियाँ, दुखियों की दर्द भरी आहे, रंगमहलों में घुल-घुलकर मरने वाली बेगमें, अपने-आप सिर में चक्कर काटती रहती हैं। मैं उनकी पीड़ा से रोने लगता हूँ। अमीर कंगाल हो जाते हैं। बड़े-बड़े का घमंड चूर होकर धूल में मिल जाते हैं। तब भी दुनिया बड़ी पागल है। मैं उसके पागलपन को मुलाने के लिए शराब पीने लगता हूँ-सरकार। नहीं तो यह बुरी बला कौन अपने गले लगाता।
ठाकुर साहब ऊँघने लगे थे। अंगीठी में कोयला दहक रहा था। शराबी सर्दी में ठिठुरा जा रहा था। वह हाथ सेंकने लगा। सहसा नींद से चौंककर ठाकुर साहब ने कहा-अच्छा जाओ, मुझे नींद लग रही हैं वह देखो, एक रुपया पड़ा हैं, उठा लो। लल्लू को भेजते जाओ।
शराबी रुपया उठाकर धीरे से खिसका। लल्लू था ठाकुर साहब का जमादार। उसे खोजते हुए जब वह फाटक पर की बगल वाली कोठरी के पास पहुँचा, तो सुकुमार कंठ से सिसकने का शब्द सुनाई पड़ा। वह खड़ा होकर सुनने लगा है
तो सुअर रोता क्यों है? कुँवर साहब ने दो ही लाते लगाई है। कुछ गोली तो नहीं मार दी? कर्कश स्वर से लल्लू बोल रहा था, किन्तु उत्तर में सिसकियों के साथ एकाथ हिचकी ही सुनाई पड़ जाती है। अब और भी कठोरता से लल्लू ने कहा- मधुआ। जा सो रह, नखरा न कर, नहीं तो उढूँगा तो खाल उधेड़ दूँगा। समझा न?
शराबी चुपचाप सुन रहा था। बालक की सिसकी और बढ़ने लगी। फिर उसे सुनाई पड़ा-ले, अब भागता है कि नहीं? क्यों मार खाने पर तुला है?
भयभीत बालक बाहर चला आ रहा था। शराबी ने उसके छोटे से सुन्दर गोले मुँह को देखा। आँसू की बूँदे ढलक रही थी। बड़े दुलार से उसका मुँह पोंछते हुए उसे चुपचाप चलने लगे। शराबी की मौन सहानुभूति को उस छोटे से सरल हृदय ने स्वीकार कर लिया। वह चुप हो गया। अभी वह एक तंग गली पर रूका ही था कि बालक के फिर से सिसकने की आहट लगी। वह झिड़क कर बोला उठा।
अब क्यों रोता है रे छोकरे?
मैंने दिन भर से कुछ खाया नहीं।
कुछ खाया नहीं, इतने बड़े अमीर के यहाँ रहता है और दिन भर तुझे खाने को नहीं मिला?
यही कहने तो मैं गया था F के पास, मार तो रोज खाता हूँ। आज तो खाना ही नहीं मिला।Hindi

कुँवर साहब का ओवरकोट लिए खेल में दिन भर साथ रहा। सात बजे लौटा तो और भी नौ बजे तक

कुछ काम करना पड़ा। आटा रख नहीं सका था। रोटी बनती तो कैसे। जमादार से कहने लगा था।

की बात कहते-कहते बालक ऊपर उसकी दीनता और भूख ने एक साथ ही जैसे आक्रमण कर

दिया, वह फिर हिचकियाँ लेने लगा।

'शराबी उसका हाथ पकड़कर घसीटता हुआ गली में ले चला। एक गंदी कोठरी का दरवाजा ढकेलकर बालक को लिए हुए वह भीतर पहुँचा। टटोलते हुए सलाई से मिट्टी की ढेबरी जलाकर वह

फटे कम्बल के नीचे से कुछ खोजने लगा। एक पराठे का टुकड़ा मिला। शराबी उसे बालक के हाथ

में देकर बोला-तब तक तू इसे चबा, मैं तेरा गढ़ा भरने के लिए कुछ और ले आऊँ-सुनता है रे

छोकरे। रोना मत, रोएगा तो खूब पीहूँगा। मुझे रोने से बड़ा बेर है। पाजी कहीं का, मुझे भी रुलाने

का....

शराबी गली के बाहर भागा। उसके हाथ में एक रुपया था। बारह माने का एक देशी अद्‌धा और

दो आने की चाय....

दो आने की पकौड़ी... नहीं-नहीं, आलू मटर

अच्छा, न सही चारो आने का माँस ही ले लूँगा, पर यह छोकरा। इसका गढ़ा जो भरना होगा,

यह कितना खाएगा और क्या खाएगा। ओह! आज तक तो कभी मैंने दूसरों के खाने का सोच-विचार

किया ही नहीं। तो क्या ले चलूँ? पहले एक अद्‌धा तो ले लूँ। इतना सोचते सोचते उसकी आँखों पर

बिजली के प्रकाश की झलक पड़ी। उसने अपने को मिठाई की दुकान पर न खड़ा पाया। वह शराब

का अद्धा लेना भूलकर मिठाई-पूरी खरीदने लगा। नमकीन लेना भी न भूला। पूरा एक रुपये का
सामान लेकर वह दुकान से हटा। जल्द पहुँचने के लिए एक तरह से दौड़ने लगा। अपनी कोठरी में
पहुँच कर उसने दोनों की पात बालक के सामने सजा दी। उसकी सुगंध से बालक के गले में एक
तरावट पहुँची। वह मुस्कराने लगा।
शराबी ने मिट्टी की गगरी से पानी उड़ेलते हुए कहा- नटखट कहीं का, हँसता है, सोंधी बास नाक
में पहुँची न। जे खूब हंस कर खा ले और फिर रोया कि पीटा।
दोनों ने, बहुत दिन पर मिलने वाले दो मित्रों की तरह साथ बैठकर भरपेट खाया।
सीली जगह में सोते हुए बालक ने शराबी का पुराना बड़ा कोट ओढ़ लिया था। जब उसे नींद
आ गई तो, शराबी भी कम्बल तान कर बड़बड़ाने लगा। सोचा था, आज सात दिन पर भरपेट पीकर
सोऊँगा, लेकिन यह छोटा-सा रोना पाजी, न जाने कहाँ से आ धमका?
एक चिन्तापूर्ण आलोक में आज पहले-पहल शराबी ने आँख खोलकर कोठरी में बिखरी हुई दारिद्रय की विभूति को देखा और देखा उस घुटनों से ठुड्डी लगाये हुए निरीह बालक को, उसने
तिलमिलाकर मन-ही-मन प्रश्न किया। किसने ऐसे सुकुमार फूल को कष्ट देने के लिए निर्दयता की
सृष्टि की? आह री नियति! तब इसको लेकर मुझे घर-बारी बनाना पड़ेगा क्या? दुर्भाग्य। जिसे मैंने
कभी सोचा भी न था। मेरी इतनी माया-ममता जिस पर, आज तक केवल बोतल का ही पूरा अधिकार
था-इसका पथ क्यों लेने लगी? इस छोटे से पाजी ने मेरे जीवन के लिए कौन-सा इन्द्रजाल रचने
का बीड़ा उठाया है? तब क्या करूँ? कोई काम करूँ? कैसे दोनों का पेट चलेगा? नहीं भगा दूँगा
इसे-आँख तो खोले?

बालक अँगड़ाई ले रहा था। वह उठ बैठा। शराबी ने कहा-ले उठ, कुछ खा ले, अभी रात का बचा हुआ
है और अपनी राह देख। तेरा नाम क्या है रे?
बालक ने सहज हँसी हँसकर कहा-मधुआ! भला हाथ-मुँह भी न थोऊँ । खाने लगूँ?
और जाऊँगा कहाँ?आह! कहाँ बताऊ इसे कि चला जाय। कह दूँ कि भाड़ में जा, किन्तु वह आज तक दुःख की
भट्टी में जलता रहा है। तो..... वह चुपचाप घर से झल्ला कर सोचता हुआ निकला-ले पाजी, अब
यहाँ लौहूँगा ही नहीं। तू ही इस कोठरी में रह!
शराबी घर से निकला। गोमती किनारे पहुँचने पर उसे स्मरण हुआ कि वह कितनी ही बातें सोचता आ रहा था, पर कुछ भी सोच न सका। हाथ मुँह थोने लगा। उजली धूप निकल आई थी।
वह चुपचाप गोमती की धारा को देख रहा था। धूप की गरमी से सुखी होकर वह चिंता भुलाने का
प्रयत्न कर रहा था कि किसी ने पुकारा-
भले आदमी रहे कहाँ? सालों भर दिखाई पड़े। तुमको खोजते-खोजते में थक गया।
शराबी ने चौंक कर देखा। वह कोई जान-पहचान का तो मालूम होता था, पर कौन है, वह ठीक-ठीक न जान सका।
उसने फिर कहा- तुम्हीं से कह रहे हैं। सुनते हो, उठा ले जाओ अपनी सामान धरने की कला,
नहीं तो सड़क पर फेंक दूँगा। एक ही तो कठरी, जिसका में दो रुपये किराया देता है उसमें क्या मुझे
अपना कुछ रखने के लिए नहीं है?
ओ हो! रामजी, तुम हो भाई मैं भूल गया था तो चलो, आज ही उठा लाता हूँ। कहते हुए शराबी
ने सोचा-अच्छी रही, उसी को बेचकर कुछ दिनों तक काम चलेगा।
.गोमती नहा कर, रामजी, पास ही अपने घर पहुंचा। शराबी की कल देते हुए उसने कहा-ले
जाओ, किसी तरह मेरा इससे पिंड छूटे।

बहुत दिनों पर आज उसको कल ढोना पड़ा। किसी तरह अपनी कोठरी में पहुँचकर उसने देखा

कि बालक वैठा है। बड़बड़ाते हुए उसने पूछा- क्यों रे, सुने कुछ खा लिया कि नहीं?

भर-पेट खा चुका हूँ ओर वह देखो तुम्हारे लिए भी रख दिया है। कहकर उसने अपनी स्वाभाविक

मधुर हँसी से उस रूखी कोठरी को तर कर दिया। शराबी एक क्षण भर चुप रहा। फिर चुपचाप जलपान

करने लगा। मन ही मन सोच रहा था, यह भाग्य का संकेत नहीं तो और क्या है? चलूँ, फिर सान

देने का काम चलता करूँ, दोनों का पेट भरेगा। वही पुराना चरखा फिर सिर पड़ा। नहीं तो, दो बातें

किस्सा, कहानी इधर-उधर की कहकर अपना काम चला ही लेता था। पर, अव तो बिना कुछ किये

घर नहीं चलने का। जल पीकर बोला-क्यों रे मधुआं, अब तू कहाँ जायेगा?

कहीं नहीं।

यह तो फिर क्या यहाँ जमा गड़ी है कि मैं खोद-खोद कर मिठाई खिलाता रहूँगा।

तब कोई काम करना चाहिए।

करेगा?

जो कहो ?

अच्छा, तो आज से मेरे साथ घूमना पड़ेगा। यह 'कल' तेरे लिए लाया हूँ। चल, आज से तुझे

सान देना सिखाऊँगा। कहाँ, इसका कुछ ठीक नहीं। पेड़ के नीचे रात बिता सकेगा न?

कहीं भी रह सकूँगा, पर उस ठाकुर की नौकरी न कर सकूँगा-शरावी ने एक बार स्थिर दृष्टि से उसे देखा। बालक की आँखें दृढ़ निश्चय की सौगन्ध खा रही थी।

शरावी ने मन ही मन कहा-बैठे-विठाये यह हत्या कहाँ से लगी? अब तो शराब न पीने की मुझे भी सौगन्ध लेनी पड़ी।

वह एक साथ ले जाने वाली वस्तुओं को बटोरने लगा। एक गट्ठर का और दूसरा कल को, दो

बोझ हुए।शराबी ने पूछा-तू किसे उठायेगा?

जिसे कहो।

अच्छा, तेरा बाप जो मुझको पकड़े तो?

कोई नहीं पकड़ेगा चलो भी। मेरे बाप कभी मर गये।

शराबी आश्चर्य से उसका मुँह देखता हुआ कल उठाकर खड़ा हो गया।

बालक ने गठरी लादी। दोनों कोठरी छोड़कर चल पड़े।

I hope that this video will be beneficial for all of you, share it as much as possible and you will definitely benefit. Yes friends, thank you.

1.